पांच अहिंदीभाषी लेखकों को हिंदी सेवी सम्मान

वर्धा, 28 दिसंबर। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा अपने 18वें स्थापना दिवस के अवसर पर कल 29 दिसंबर 2015 को पांच अहिंदीभाषी रचनाकारों को हिंदी सेवी सम्मान से अलंकृत करेगा। सम्मान पानेवाले रचनाकार हैं- हिंदी व ओड़िया के बीच अनुवाद के जरिए सेतुबंधन करनेवाली प्रो. यशोधारा मिश्रा, हिंदी-मराठी के सेतुबंध डा. सूर्यनारायण रणसुभे, मराठीभाषी हिंदी रचनाकार द्वय ज.ग.फगरे व डा. छाया पाटील तथा तेलगुभाषी हिंदी विद्वान डा. एम. वेंकटेश्वर। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने दी।

हिंदी सेवी सम्मान पानेवाली प्रो. यशोधारा मिश्रा कई दशकों से ओ़डिया साहित्य में एक सुपरिचित नाम हैं। ओ़डिशा के रेवेंशा कालेज और वाणी विहार से शिक्षा समाप्त करने के बाद उन्होंने मध्य प्रदेश के विभिन्न सरकारी कालेजों में अंग्रेजी अध्यापन किया। शिमला के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ एडवांस स्टडीज एवं यूजीसी के सीनियर फेलो के रूप में ओ़डिया लोक साहित्य पर उन्होंने शोध कार्य किया। उनकी कई रचनाएँ भारतीय भाषाओं में अनूदित और प्रकाशित हैं। वे अंग्रेजी प्रोफेसर के पद से सन 2013 में सेवानिवृत्त हुईं। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली से अंग्रेजी में प्रकाशित होनेवाली द्वैमासिक पत्रिका इंडियन लिटरेचर की वे अतिथि संपादक रह चुकी हैं। अब तक उनके ओ़डिया भाषा में तीन उपन्यास, पाँच कहानी-संग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित हैं। उनकी दो पुस्तकें ओ़डिया से हिंदी में तथा एक पुस्तक अंग्रेजी में अनूदित हैं। उन्होंने हिंदी एवं अंग्रेजी की कई पुस्तकों का अनुवाद किया है।

हिंदी सेवी सम्मान पाने जा रहे डा. सूर्यनारायण रणसुभे की सोलह समीक्षात्मक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने चौबीस पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद तथा आठ पत्रिकाओं का संपादन किया है। आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास, कहानीकार कमलेश्वरः संदर्भ और प्रकृति, देश-विभाजन और हिंदी कथा साहित्य, दलित साहित्य स्वरूप और संवेदना आदि उनके प्रमुख समीक्षात्मक ग्रंथ हैं। यादों के पंछी, अक्करमाशी, उठाईगीर, बामनवाडा आदि पुस्तकों का मराठी से हिंदी में तथा कई हिंदी पुस्तकों का मराठी में अनुवाद किया है। हिंदी सेवी सम्मान पाने जा रहे ज.ग.फगरे बावनवें मराठी साहित्य सम्मेलन पुणे के स्वयंसेवक प्रमुख रह चुके हैं। उन्होंने हिंदी परीक्षा: गद्य पद्य व्याकरण तथा बोधपरक मार्गदर्शन पर सौ से अधिक व्याख्यान दिये हैं। उन्हें अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ दिल्ली से विशिष्ट प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ है। उन्होंने शिक्षा और हिंदी विषय पर समाचारपत्रों में नियमित

लेखन किया है। हिंदी सेवी सम्मान पाने जा रहीं डा. छाया पाटील पिछले कई दशकों से प्रशासन और अध्यापन के कार्य से जुड़ी हुई हैं। वे शिक्षण संक्रमण, प्राध्यापक विश्व, विपश्यना आदि की सदस्या रह चुकी हैं। उन्होंने शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर में अध्यापन भी किया है। उन्हें वर्ष 2012 में उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

हिंदी सेवी सम्मान पाने जा रहे प्रो. एम. वेंकटेश्वर मूलतः तेलगुभाषी हैं किंतु हिंदी साहित्य लेखन एवं अध्यापन में चार दशकों से अधिक समय से सक्रिय हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, भाषा विज्ञान, अनुवाद अध्ययन, हिंदी भाषा शिक्षण, प्रयोजन मूलक हिंदी, मीडिया लेखन के क्षेत्र में उनका विशिष्ट योगदान है। वे उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद के साथ विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्यापन से जुड़े रहे हैं। हिंदी भाषा एवं साहित्य क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिए बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, उ.प्र. हिंदी संस्थान तथा भारत सरकार के गंगाशरण सिंह आदि पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया है। उनकी पाँच पुस्तकें प्रकाशित हैं।

प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने बताया कि इन पांच अहिंदीभाषियों के अलावा हिंदी साहित्यकार चित्रा मुद्गल को भी हिंदी सेवी सम्मान से विभूषित किया जाएगा। चित्रा मुद्गल की अब तक बयालीस पुस्तकें प्रकाशित हैं। इनमें चौदह कहानी-संग्रह, चार उपन्यास, तीन नाटक और वैचारिक आलेखों के दो संकलन शामिल हैं। लाक्षागृह, अपनी वापसी, दुल्हिन, जिनावर, जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं, इस हमाम में, केंचुल और चेहरे चर्चित कहानी-संग्रह हैं। गिलिगडु, एक जमीन अपनी, क्रुसेड और आवां उनके प्रमुख उपन्यास हैं। वे 2003 में व्यास सम्मान पानेवाली देश की प्रथम लेखिका हैं।